परिशिष्ट

अक्षर पर्व

संजीव
संपादक

प्रिय दाक्षायणीजी,

पत्र मिला। एम. फिल कर रही हैं, जानकर खुशी मिली।

कथा संग्रह ज्यादातर Out of print हैं। इन्हें प्राप्त करने का एक उपाय है कि आप पैसे भेज दें (400/-) ताकि उनकी फोटोस्टेट कॉपी आपको भेजी जा सके। ये पैसे इस नाम पते पर भेजें-

डॉ० रविशंकर सिंह,
अध्यापक,
मारवाड़ी विद्यालय
रानीगंज (Raniganj)
जि० : बर्द्धमान (पश्चिम बंगाल)

मनी आर्डर में एक बार फिर से चारों संग्रहों के नाम लिख देंगी ताकि भूल न हो।

मेरा फोन नं० 0341-2517009 है। रात 9 बजे फोन करने से मिलने की सुविधा रहेगी।

स्वस्थ होंगी।

आपका
संजीव

* पुनश्च, यह पत्र एक संपादक का अनुरोध-वाहक भी है – मराठी या तेलगू, कन्नड़, की किसी उत्कृष्ट कहानी का अनुवाद संभव हो तो भिजवायें, शर्त बस इतनी कि कहानी अच्छी हो। पर इस बात को लेकर परेशान न हों।

संपादकीय संपर्क-बीडीओ पारा, कुल्टी, प. बंगाल-713343 फोन-(0341)2517009
मुख्यालय-देशबन्धु प्रकाशन विभाग, रामसागरपारा, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492001 फोन-(0771) 2292011/22

डॉ॰ रविशंकर सिंह, मारवाड़ी सनातन विद्यालय, पो॰ रानीगंज, वर्धमान
PIN - 713347, दूरभाष - 0341-2440636

आदरणीया द्राक्षायणी जी,

आपका भेजा हुआ चार सौ रुपया मिला। मनिआर्डर फार्म पर लिखित आपका पता मैंने लिख लिया है। मेरे मन में आशंका बनी हुई है कि पुस्तकें इस पते पर पहुँचेंगी या नहीं। कृपया अंग्रेजी में अपना पूरा पता लिख कर भेजें। मैंने उन चारों पुस्तकों का जेराक्स करवा लिया है, जिनकी आपको जरूरत है। पत्र लिखने में विलम्ब हुआ, क्षमा करेंगी। इन दिनों कुछ व्यस्तता बढ़ गई थी। यदि यह पता ठीक हो तो आप रात में फोन द्वारा सूचित कर सकती हैं। कोल्हापुर में मेरे एक फ्रेन्ड हैं, उन्होंने भी संजीव पर कुछ काम किया है।

— रविशंकर सिंह

No cut, no stitch, no pain - NSV - a modern method of birth control for men

पोस्ट कार्ड POST CARD

प्र.मु. / S.P.P. - 2002

भारत INDIA ₹50 पंचमहल फतेहपुर सीकरी PANCHMAHAL FATEHPUR SIKRI

प्रति,
कुमारी द्राक्षायणी अण्णा साहब शिंदे
प्लाट न॰ 107, के॰ एस॰ एफ॰ कॉलोनी
100 वाणा, स्टड॰ फर्म॰ न्यू पैलेस एरिया
रमणमळा
कोल्हापुर
पिन PIN 416003
महाराष्ट्र

परिशिष्ट - 2

संजीव जी का दि. 15-10-2004 को लिया हुआ साक्षात्कार

1. मैं आपके माता-पिता तथा परिवार के बारे में जानना चाहती हूँ ?

   मेरी माँ का नाम स्व. जयराजीदेवी तथा पिता का नाम स्व. रामशरण प्रसाद था। तीन भाई और एक बहन में मैं सबसे छोटा हूँ।

2. बचपन में आप कौन-सी बातों में अधिक रुचि रखते थे ?

   बचपन में मुझे तो पढ़ाई-लिखाई से ज्यादा खेलने-कूदने में मजा आता था। भैंस चराना भी भाँता था।

   आपका शालेय तथा महाविद्यालय जीवन कैसा रहा ?

   स्कूली जीवन में ही भेड़े की तरह सर लड़ाने में ख्याति हासिल की थी। दंगा-मस्ती खुब करता था। मॉनिटर समाज के रूप में सूरज की ओर ताकते रहने को कहता था। महाविद्यालयीन जीवन में फुटबॉल का कैप्टन रह चुका हूँ तथा कबड्ड़ी भी अच्छी खेल लेता हूँ। कबड्ड़ी में स्वींग करना अच्छा लगता है।

   क्या आप अपनी पत्नी के बारे में बतायेंगे ?

   मेरी शादी बहुत कम उम्र में हुई। पत्नी का नाम प्रभावती है, जो सीधी-सार्धी गृहणी है। ग्रामीण परिवेश के कारण वह चौथी क्लास तक ही पढ़ पायी।

5. आपकी कितनी संतानें हैं ?

   चार बेटियाँ और एक बेटा ऐसी पाँच संतानें है। बड़ी बेटी मंजू मेन्टली रिटायर है। सबसे छोटा बेटा संतोष कंपीटीशन की मरीचिका में भटक रहा है।

6. आपके मित्र-परिवार में कौन लोग हैं ? जिन्हें आप आत्मीय समझते हैं ?

   मित्र परिवार का जो मेरा सिलसिला है वह काफी बड़ा है। किन-किन के नाम गिनाऊँ। फिर भी भाई, भाभियाँ आदि लोग भी मेरे आत्मीय एवं प्रेरणास्थान हैं।

7. आपने जीवन में किन-किन मुसीबतों का सामना किया ?

अरे ! भई जीवन में मुसीबत नहीं तो रहा क्या ? जीवन में बहुत सारी दुर्घटनाएँ घटित हुई हैं। सबसे बड़ी दुर्घटना तो भाई, माता-पिता, काका की मौत है। जिससे मेरा मन विचलित होता है।

8. आप अपने व्यक्तिगत जीवन में किस चीज को ज्यादातर महत्त्व देते हैं ?

व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी को ज्यादा महत्त्व देता हूँ। आदमी के कमीनेपन तथा जातिवाद से नफरत करता हूँ।

9. हिंदी के दलित-साहित्य के वर्तमान रूप को लेकर आपकी क्या मान्यता है।

हिंदी में अभी-भी दलित-साहित्य खुला नहीं है। मराठी का दलित साहित्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हिंदी का दलित-साहित्य अभी कुछ करके सीधे खड़ा होना चाहिए। उसके पाँव डगमगा रहे हैं। मराठी का दलित-साहित्य जो अपने पाँव पर खड़ा है, उसकी कॉपी करना चाहता है, जैसे आत्मकथाएँ आदि कुछ। दलित साहित्य में सिर्फ आत्मकथाएँ नहीं होती। दलितों का पूरा अस्तित्व और अस्मिता को लेकर तथा उन पर पड़ते दबाव उनके लॅमिनेशन को लेकर लिखना चाहिए।

10. वर्तमान में कितने लोग दलित-साहित्य को लेकर लिख रहे हैं ?

देखिए ! दलित साहित्य को लेकर बहुत सारे लेखक लिख रहे हैं, लेकिन दलित लेखक अपनी अनुभूति पर लिखता है और गैर दलित लेखक सहानुभूति पर लिखता है।

11. क्या दलित साहित्य के माध्यम से समाज जागृति और परिवर्तन होगा ?

कोई परिवर्तन संभव नहीं है। साहित्य मात्र बीज है, जिस प्रकार बीज बोने के लिए खाद-पानी चाहिए उसी प्रकार साहित्य को पढ़नेवाला भी चाहिए।

12. आपकी कहानियों में सपेरे, आदिवासी, मजदूर, चोर आदि अलग-अलग वर्ग के पात्र मिलते हैं, क्या आप इन पात्रों को करीब से जानते हैं या ये सिर्फ काल्पनिक पात्र हैं ?

ये सारे पात्र जीवन में कहीं-ना-कहीं हैं, सत्य हैं। कोई भी पात्र मैंने काल्पनिक नहीं लिखे हैं। मैं जिस मुहल्ले में रहता हूँ, वहाँ पे ये पात्र दिखाई देते हैं। चोर, शराबी, आदिवासी ये

सब पात्र जाने-पहचाने हैं।

13. सुना है कि 'टीस' कहानी के लिए आप सपेरों के गाँव गए थे ?

जी हाँ ! बिल्कुल सपेरों का जीवन, उनका खान-पान, रहन-सहन, उनकी आस्थाएँ आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर फिर उसे वर्णित किया। साँप देखकर मुझे डर लगता है, लेकिन फिर भी वह मुझे करना पड़ा।

14. 'प्रेतमुक्ति' कहानी शीर्षक के पीछे क्या उद्देश्य है ?

प्रेत जो है वह पूरे परिवेश पर छाया रहता है।

15. क्या आपको यह अंधश्रद्धा नहीं लगती ?

अंधश्रद्धा ! नहीं मैं तो चाहता हूँ कि समाज जहाँ-जहाँ जाता है उसी के माध्यम से उन तक पहुँच जाऊँ। मैंने जान बुझकर इसमें अंधश्रद्धा टोना-टोटका का इस्तेमाल किया है। यह कल्पना मेरे दिमाग में कैसी आयी पता नहीं। बस् लिख डाला।

16. आपको दलित-साहित्य लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

क्यूँ कि मैं आदमी हूँ। मेरा गाँव है जो हमेशा मुझे प्रेरणा देता है। जो मैंने देखा, अनुभव किया उसी को लिखा है।

17 मरोड़, पिशाच तथा महामारी कहानी आपके जीवन में घटित है ?

जी हाँ ! कुछ-कुछ अंश इस कहनियों में लिखे हैं। पिशाच का महातम बाबा मेरे जीवन में घटित पात्र है लेकिन उसके बारे में पूरा नहीं लिखा है। 'महामारी' तो मेरे बचपन में घटित घटना है। 'मरोड़' वह अपने जीवन से जुड़ी है।

18. मतलब कहानियों में आपके जीवन की ज्यादा सच्चाई है ?

नहीं ! सब में नहीं।

19. आप अपनी कामयाबी का सच्चाराज क्या समझते हैं ?

कामयाब हूँ कि नहीं ये मैं खुद नहीं जानता।

20. लेकिन हमारे दृष्टि से तो आप कामयाब हैं ?

ये तो (हँसकर) कामयाबी असल में होता क्या है कि समाज अगर एक इंच भी सरकता है, तब तो मैं कामयाब हूँ। अगर नहीं सरकता तो हमारे सारे प्रयास व्यर्थ हैं। और मैं ऐसे मर जाऊँगा लिखते-लिखते तो वो कामयाबी मुझे अच्छी लगेगी।

मैं अपना सारा श्रेय माता-पिता, दोस्तों, पाठकों तथा समाज को देता हूँ।

परिशिष्ट - 3

प्रश्नावली

(1) आपका साहित्यिक जीवन किसकी प्रेरणा से प्रारंभ हुआ?
(2) आपके मित्र-परिवार में कौन लोग है, जिन्हें आप आत्मीय समझते है?
(3) आप अपने व्यक्तिगत जीवन में किस चीज को ज्यादातर महत्व देते है?
(4) हिंदी के दलित-साहित्य के वर्तमान रूप को लेकर आपकी क्या मान्यता है?
(5) क्या दलित साहित्य के माध्यम से समाज जागृती और परिवर्तन होगा?
(6) आप किन दलित साहित्यकारों को महत्त्वपूर्ण मानते है? क्यों?
(7) क्या आप लेखन के माध्यम से समाज में क्रांती लाना चाहते है?
(8) व्यक्तिगत रूप से आप और अन्य समाज कार्य करते है क्या?
(9) आप अपने समकालीन लेखकों के बारे में क्या कहना चाहेंगे?
(10) आज की राजनीति और आपकी कहानियों के राजनीतिक नेता यथार्थवादी लगते हैं, इसके बारे में आपकी मान्यता जानना चाहती हूँ?
(11) आपके कहानियों के सपेरे, आदिवासी, मजदूर, चोर आदि अलग-अलग वर्ग के पात्र मिलते है, क्या आप इन पात्रों को करीब से जानते हैं या ये सिर्फ काल्पनिक पात्र हैं?
(12) 'प्रेतमुक्ति' शीर्षक के पीछे क्या उद्देश्य रहा?
(13) 'मुर्दगाह, लॉगसाइट, सीपियों का खुलना, नौटंकी तथा वापसी' इन कहानियों के माध्यम से आप क्या बताना चाहते हैं?
(14) भविष्य में आपकी क्या संकल्पनाएँ है?
(15) कथाकार के माध्यम से आप अपनी कामयाबी का सच्चा राज क्या मानते हैं?
(16) आपको आपका सबसे अच्छा उपन्यास तथा कौनसी कहानी पसंद है?
(17) साहित्य में किसका साहित्य आपको ज्यादा पसंद है? क्यों?
(18) आपकी आनेवाली रचनाओं के बारे में बतायेंगे?
(19) दलित साहित्य लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?
(20) आपको प्राप्त पुरस्कारों की सूची दीजिएगा?
(21) एक साहित्यकार के नाते आप समाज के लिए क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं कल शाम को दिल्ली से आया। विलंब के लिए खेद है। शुभाकांक्षी
संजीव

प्रश्नोत्तर

1. किसी एक व्यक्ति का नाम लेना संभव नहीं। मेरा परिवार, बड़े भैया रामजीवन प्रसाद, स्कूल के अध्यापक नंदकिशोर दास सोनी, अनिल कुमार महथा, पारसनाथ पाठक, मिलिन्द कश्यप, वरिष्ठ मित्र नरेन्द्रनाथ ओझा देवनाथ सिंह, कालेज आदि की प्रतियोगिताएं, दिनमान जैसे साप्ताहिक अनेक नाम हैं। प्रेमचंद, सुदर्शन आदि की कहानियाँ भी...)

2. मेरे माता-पिता, चाचा, मुझसे बड़े दो भाई, जो दिवंगत हो चुके हैं। जीवित लोगों में आत्मीयों की सूची खासी लंबी है। मेरा अपना परिवार, भाभियाँ, कुछ साहित्यिक मित्र राजेन्द्र यादव, शिवमूर्ति, सुभाष कुमार, रविशंकर सिंह, ओमा शर्मा, हरिनारायण, बलराम, गौतम सान्याल, कितने नाम गिनाऊँ?

3. शौर्य और शांति, जरूरत भर आर्थिक, पारिवारिक सुरक्षा स्वस्थ जीवन। न दैन्यम्, न पलायनम्। विषमता और अन्याय के खिलाफ संघर्ष।

4. हिन्दी का दलित लेखन अभी विकासमान स्थिति में है अतः बहुत सी बातें साफ नहीं हैं, मसलन 'दलित' का दायरा क्या है? क्या इसमें कुछ ही जातियाँ हैं? क्या 'आदिवासी' दलित से अलग हैं? मैं इस मान्यता का तो कायल हूं कि एक दलित ही दलित की पीड़ा को अच्छी तरह समझ सकता है, मगर गैर दलित बिल्कुल ही नहीं समझ सकते - इस पर सहमत होना मुश्किल है। स्वानुभूति और सहानुभूति वाले दलित लेखन में फर्क तो ढूंढा जा सकता है मगर सहानुभूति परक लेखन को एक सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। जनान्दोलनों में भी पेरियार, फूले आदि और आज के साहित्यिक आंदोलनों में मुद्राराक्षस, राजेन्द्र यादव, रमणिका गुप्ता गैर दलित हैं। आत्मकथात्मक साहित्य मात्र से दलित लेखन पुष्ट नहीं होता, न ही वह अपने 'दंश' को जैसे-तैसे अभिव्यक्त कर देने भर से पूरा हो जाता है, कला की शर्तों पर भी उसे अपनी सामर्थ्य का परिचय देना होगा। खुशी है कि दलित लेखन में यह सामर्थ्य धीरे-धीरे आ रही है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, ज्योतिप्रकाश कर्दम, नैमिशराय, सूरजपाल सिंह चौहान, रजत कुमार सांमरिया, अजय नावरिया जैसे कई हस्ताक्षर महत्वपूर्ण हैं।

अपनी सामाजिक संरचना में व्याप्त अशिक्षा, अंधकार, गरीबी आदि को देखते हुए।

5. आंशिक रूप से ही दलित लेखन से सामाजिक जागृति या क्रांति संभव है, पूरी क्रांति तो सामाजिक-राजनीतिक, ~~और~~ सांस्कृतिक आंदोलनों से ही संभव है और वह एक लंबी ~~प्रक्रिया~~ प्रक्रिया है जिसमें पग-पग पर विचलन के खतरे हैं।

6. इसका उत्तर प्र०-4 में दे चुका हूँ।

7. चाहता तो यही था।

8. सभा-सम्मेलनों में कभी अंशत: सक्रिय था, अभी कुछ वर्षों से पारिवारिक उलझनों में उलझ कर रह गया हूँ।

9. ~~लेखक~~ समकालीन लेखक स्वयं परिपक्व जन हैं, उन्हें भला मैं क्या कह सकता हूँ?

10. आज की राजनीति और राजनेता के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति दोयम दर्जे की चीज़ है मुख्य है ~~उनका~~ सत्ता प्राप्ति। सत्ता के लिए ये अपने शत्रुओं तक के तलवे चाट सकते हैं, इनकी सारी नौटंकी, सारा स्वांग ~~इनके~~ इनकी सीमाएं स्पष्ट करते हैं नेतृत्व की यह भ्रष्टता निचले तबकों में निराशा भरती है। राजनीतिक दलित आंदोलन, दलित साहित्य ~~का~~ से कुछ भी प्रेरणा या मार्गदर्शन लेने की जरूरत महसूस नहीं करता। यही हालत जनता की भी है, ~~।~~ वह दलित साहित्य या साहित्य में ~~रुचि~~ कम ही रखती है।

11. अपनी कहानियों के पात्रों में सपेरे, आदिवासी, चोर, मजदूर या तलहटी के लोग मेरे परिचित हैं, कथा के विन्यास में ~~व~~ पैवस्त करने के लिए ~~इन्हें~~ कल्पना के हल्के ब्रश से संवारना भर जरूर है इन्हें। मात्र कल्पना से मैं कुछ भी नहीं लिख पाता।

12. 'प्रेत मुक्ति' शीर्षक से ही स्पष्ट है प्रेत से मुक्ति। एक पूरे समाज पर फैली है प्रेत की छाया। इंसान, पशु, बाघ (शौर्य) सब की नस्लें छोटी से छोटी होती जा रही हैं। जीवनदायिनी नदी और प्रकृति तक पर उसी प्रेत का कब्जा है। बाप चलितर महतो ~~ब~~ बहादुर है, बेटा जगेसर बाप से हीन। बाप की सवारी आते ही वह बहादुर बन जाता है। क्षय हो रही प्रजातियों और क्षयमान शौर्य की संधान गाथा है 'प्रेत मुक्ति', कला की शर्तों पर उतरना इसकी दूसरी चुनौती थी, मनुष्य को हीन बनाने वाली शक्तियों के विरुद्ध एक रचनात्मक हस्तक्षेप है 'प्रेत मुक्ति'।

13 'मुर्दागाह' यानी मुर्दों का घर। कहानी से स्पष्ट होगा कि नायक को मुर्दों के बीच 'जीवित' की तलाश है। नाना से शुरू हुई कथा नाती पोतों तक आते-आते कितनी विकृत हो चुकी है! तकियादार (कब्रिस्तान का संरक्षक) के माध्यमसे साम्प्रदायिकता की जमीन पर खड़ी कहानी मुर्दों के बीच ज़िन्दा लोगों या शोषों के संरक्षण की कहानी है।

'वापसी' भी प्रकारांतर से शोषों कहीं के ही के संरक्षण की ही कथा है, पृष्ठभूमि फौजी है। सैनिक, मुख्यतः क्रूर होते हैं, फसलों, बच्चों, औरतों को रौंदते हैं देशभक्ति के नाम पर। इसीका प्रतिकार है कथा में। वापसी यानी जहां से विचलित हो गए थे, वहां वापस लौटना।

'लांग साइट' में नज़दीक की चीज़ नहीं दिखाई देती, दूर की दिख जाती है। एक आंख [illegible] की कारण विद्रूप कथा है लांग साइट। ~~[illegible]~~ न्याय के लिए लड़ रहे अपने ही बच्चे को अनजाने में दो चपत जमा कर उसे लगता है, उसने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली। यह नायक रूस, चीन, देश से नीचे की बात तक नहीं करता नायक, जबकि उसे अपने सामने की चीज़ नहीं दिखती।

'सीपियों का खुलना' एक प्रेमकथा में प्रेमिका के विचलन 'डेविएशन' के चलते प्रेमी का विपर्यय घटित होता है। दो सीपियों के दोनों couple जो एक साथ जुड़ कर मोती (Pearl) बुनने का स्वप्न संजोये हुए थे, अलग-अलग हो जाते हैं- मवाद सी बह जाती है ईमानदारी। एक क्रांतिधर्मी प्रेमी-प्रेमिका के विपर्यय की कथा है यह।

'नौटंकी' में स्वांग के प्रति सहज आकर्षण में भ्रम होता है कि राम, कृष्ण की भूमिका करने वाला वास्तविक रूप में वैसा ही होगा, जबकि वैसे होते नहीं यों मंच पर जो ~~भूमिका नि~~ होने का भ्रम पैदा किया जा रहा है, मंच के पीछे नेपथ्य में उनके असली चेहरे कुछ और ही हैं। यह एक प्रतीकात्मक रचनायोजना की कथा है।

(*) मुझे विस्तार से जानने के लिए 'मैं और मेरा समय' कथादेश जून 1999 पढ़ें। प्रतिलिपि डॉ० गिरीश काशिद के पास है।

(*) नया तो उपन्यास 'सूत्रधार' है, कथा संग्रह 'गति का पहला सिद्धांत' (मेधा बुक्स, दिल्ली) तथा 'गुफा का आदमी' ज्ञानपीठ, दिल्ली से शीघ्र प्रकाश्य है।

(14) योजना तो यह थी कि लेखकेतर काम करूँगा, 'ज्ञान-विज्ञान जगत' जैसा कुछ पर अभी पारिवारिक दायित्वों से ही मुक्त नहीं हो पाया। ऐसे में एक उपन्यास चल रहा है, वह 'जीसस' और 'मरियम' पर है। ~~मनुष्य की~~ (प्रकारांतर से दलित, दोहित, शोषित मनुष्यों की मुक्ति के लिए जहाँ-जहाँ काम हुए हैं, हो रहे हैं, उनका आकलन करना भी भविष्य की योजना में शामिल है। पर ये सब बड़ी-बड़ी बातें हैं। बिना किए, अच्छा नहीं लगता इन पर कुछ कहना)

(15) मैंने यथार्थ को यथावत्‌ न रखकर उसे कलात्मकता में रखकर जीवंत बनाने का प्रयास किया, वैसे यह तो पाठकों की स्वीकृति पर है। मैंने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से एक बेहतर समाज, दमन मुक्त समाज की संकल्पना की, मनुष्य के अंदर छिपे उदात्त मानव की तलाश - इससे ज्यादा कुछ नहीं।

16. यह बता पाना मुश्किल है।

17. अभी जनधर्मी साहित्य। यह कोई एक नाम नहीं है। प्रायः हर भाषा में यह साहित्य विपुल परिमाण में रचा जा रहा है। देश में ही नहीं विदेशों में भी। ब्लैक लिटरेचर, कैरेबियन लिटरेचर, आप्टेन सेन्क्लेयर, मार्क ट्वेन, नार्डिमीर प्रेमचंद ~~आदि~~.. यू. आर. अनंतमूर्ति (घटश्राद्ध) आदि।

18. प्रश्न-14 देखें।

19. दलित साहित्य जैसा कोई वर्गीकरण मेरी जेहन में नहीं था, न है। जो भी वंचित, दलित, दोहित, अपमानित हैं, सब के प्रति एक-सा भाव था। मेरी रचनाएं इस बात की साक्ष्य हैं। ~~आप्टेन सेन्क्लेयर, मार्क ट्वेन नार्डिमीर, प्रेमचंद, प्रसाद, सुदर्शन,~~

20. सारिका सर्वभाषा कथा-प्रतियोगिता- प्रथम पुरस्कार 'अपराधी'-1980
प्रथम कथाक्रम सम्मान, लखनऊ 1997
इंदु शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान, लंदन 2001
आदि...।

21. जो भी संदेश है, वह रचनाओं के माध्यम से प्रेषित करता रहा हूं, अलग से क्या कहूं? अन्याय, शोषण, दमन, वैषम्य का प्रतिकार ही हम सभी का लक्ष्य होना चाहिए।

22. मैंने यह उपन्यास नहीं पढ़ा। सुना है कोई आध्यात्मिक रुझान का उपन्यास है। अपने अन्तरमन में गोल-गोल... [illegible]
[illegible]

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) आधार ग्रंथ -

अ.	*लेखक का नाम*	*पुस्तक का नाम*	*प्रकाशन*	*वर्ष*
1.	संजीव	तीस साल का सफरनामा	दिशा प्रकाशन, 138/16 ओंकार नगर - बी, त्रिनगर, दिल्ली - 35	1981
2.	संजीव	आप यहाँ हैं	अक्षर प्रकाशन, 2/36, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली - 2	1984
3.	संजीव	भूमिका तथा अन्य कहानियाँ	पराग प्रकाशन, 3/114 कर्णगली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली - 32	1987
4.	संजीव	दुनिया की सबसे हसीन औरत	यात्री प्रकाशन, बी-131, सादतपुर, दिल्ली - 94	1990
5.	संजीव	प्रेतमुक्ति	दिशा प्रकाशन, 138/16 ओंकार नगर - बी, त्रिनगर, दिल्ली - 35	1997

आ) संदर्भ ग्रंथ -

1	अम्बलेगे (डॉ) काशीनाथ	संतो और शिवशरणों के काव्यों में सामाजिक चेतना	अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर।	1990
2	आहूजा राम	सामाजिक समस्याएँ	रावत पब्लिकेशन, दिल्ली।	2000

अ.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	वर्ष
3	कुलकर्णी रेवा	हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी	चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर।	1994
4.	गुप्ता (डॉ.) चमनलाल	यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक कथा	शारदा प्रकाशन, दिल्ली।	1988
5	जाधव (डॉ.) बलवंत साधु	प्रेमचंद के साहित्य में दलित चेतना	अलका प्रकाशन, कानपुर।	1992
6	टंडन प्रतापनारायण	हिंदी कहानी कला	हिंदी समिती सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश लखनऊ।	1970
7	ठाकुर (डॉ.) देवेश	मैला आंचल की रचना प्रक्रिया	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।	1987
8	तिवारी (डॉ.) सुरेंद्रनाथ	प्रेमचंद शरतचंद के उपन्यासों में : मनुष्य बिंब	कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर।	1969
9	त्यागी सुमित्रा	हिंदी उपन्यास : आधुनिक विचारधाराएँ	साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।	1978
10	पांडेय (डॉ.) गणेश प्रसाद	आठवें दशक की हिंदी कहानी में ग्रामीण जीवन	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।	1999
11	बत्रा सुदेश	हिंदी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य	रचना प्रकाशन, जयपुर।	1996
12	बांदिवडेकर चंद्रकांत	हिंदी और मराठी सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर।	1969
13	बेनीपुरी (डॉ.) प्रभा	बेनीपुरीजी के नाटकों में सामाजिक चेतना	कॅपिटल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।	1989

अ.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	वर्ष
14	भास्कर (डॉ.) विमल	हिंदी में समस्या साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथूरा।	1983
15	मुंशी प्रेमचंद	कुछ विचार	सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद।	वर्तमान संस्करण 1982
16	मार्कण्डेय सरोज	निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ	विद्‌या प्रकाशन, कानपुर।	1989
17	रावत (डॉ.) अनिता	अमृतलाल के उपन्यासों में आधुनिकता	चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर।	1998
18	राय कृष्णदास	हिंदी कहानी कला	हिंदी समिती सूचना विभाग (उ.प्र.), लखनऊ।	1996
19	लोखंडे (डॉ.) अरुणा	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में जनचेतना	विकास प्रकाशन, कानपुर।	1996
20	वरठे (डॉ.) चंद्रकुमार	दलित साहित्य, आंदोलन	रचना प्रकाशन, 57 नाटानी भवन, मिर राजाजी का रास्ता चांदपोल बाजार, जयपुर	1997
21	शर्मा (डॉ.) ज्योत्स्ना	शिवानी का हिंदी साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में	अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर।	1994
22	सिंह (डॉ.) इंद्रपाल	साहित्यिक निबंध एक नवीन दृष्टि	अतुल प्रकाशन, कानपुर।	1981
23	सुषमा प्रियदर्शनी	हिंदी उपन्यास	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1972

इ) मराठी ग्रंथ -

1.	कांबळे अरूण	धर्मांतराची भीम गर्जना	प्रतिभा प्रकाशन, पुणे।	1996
2.	यादव आनंद	1960 नंतरची सामाजिक स्थिति आणि साहित्यातील नवे प्रवाह	मेहता पब्लिकेशन, पुणे।	2001

ई) शब्दकोश -

अ.	लेखक का नाम	कोश का नाम	प्रकाशन	वर्ष
1.	चातक (डॉ.) गोविंद (संपा)	आधुनिक हिंदी शब्दकोश	तक्षशिला प्रकाशन, 23/4762, दरियागंज, नई दिल्ली - 2	1986
2.	जैन आदिशकुमार	नालंदा विशाल शब्दसागर	आदिश बुक डेपो नई दिल्ली - 5	1988
3.	दास श्यामसुंदर	हिंदी शब्दसागर	काशी नागरी प्रचारिणी सभा	1972
4.	बाहरी हरदेव	उच्चतर हिंदी-अंग्रेजी कोश	वाणी प्रकाशन 4697/5, दरियागंज, नई दिल्ली - 2	1988
5.	वर्मा रामचंद्र	मानक हिंदी कोश (खंड पाँचवा)	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	1966
6.	वर्मा रामचंद्र	संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	1933

उ) संस्कृत कोश -

अ.	लेखक का नाम	कोश का नाम	प्रकाशन	वर्ष
1.	देव राधाकांत	शब्द कल्पद्रूम द्वितीय भाग	चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-1	तृ.सं. 2024 वि.

ऊ) मराठी कोश -

1.	जोशी प्रल्हाद नरहर	आदर्श मराठी शब्द कोश	विदर्भ मराठवाडा बुक कंपनी, पुणे - 2	1970

ए) पत्र-पत्रिकाएँ -

नं.	संपादक	पत्रिका	महिना	वर्ष
1.	कालिया रविंद्र	वागर्थ	अगस्त	2004
2.	गोपालराय : हरदयाल	समीक्षा	एप्रिल-जून	2005
3.	चतुर्वेदी कुसुम	नया मानदंड	अक्तूबर-दिसंबर	1998
4.	चतुर्वेदी कुसुम	नया मानदंड	अक्तूबर - दिसंबर	1999
5.	नामवरसिंह	आलोचना	जुलाई-सितंबर	2001
6.	पांडेय रतनकुमार	अनभै	जुलाई-सितंबर	2004
7.	पांडेय रतनकुमार	अनभै	अक्तूबर-दिसंबर	2004
8.	यादव राजेंद्र	हंस	जनवरी	1999
9.	हरिनारायण	कथादेश	जून	1999
10.	चर्चापत्रिका अंक - 9			